डेमोक्रेटिक दावेदार

चार्ल्स डार्गाफ © ए. पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

रिपब्लिकन दावेदार

लिन स्वेडकर्ड © ए. पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

एक अलग शुरुआत

मिशेल ऑस्टीन

अमेरिकी समाज में विविधता बढ़ने के साथ ही इस बार के राष्ट्रपति चुनाव में कई तरह के उम्मीदवार सामने दिखाई दे रहे हैं।

लिन बॉयड © ए. पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

इस वर्ष के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के बारे में दो विशेषज्ञों से इंटरव्यू।

अमेरिका में वर्ष 2008 का राष्ट्रपति चुनाव इस अर्थ में असामान्य है कि उसमें न तो कोई वर्तमान राष्ट्रपति और न उप-राष्ट्रपति इस सर्वोच्च पद का चुनाव लड़ रहा है। 'कुक पॉलिटिकल रिपोर्ट' के संपादक तथा प्रकाशक चार्ली कुक और 'नेशनल जर्नल' के कंट्रीब्यूटिंग एडिटर जेरी हैगस्ट्रॉम की वर्ष 2008 के चुनाव परिदृश्य पर परिचर्चा।

क्या आप बताएंगे कि वर्ष 2008 के राष्ट्रपति चुनाव के बारे में अमेरिका और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोग इतने पहले से इतनी रुचि क्यों ले रहे हैं और राष्ट्रपति पद की यह चुनावी दौड़ इससे पहले के अमेरिकी चुनावों से अलग क्यों है?

कुक: पिछले 80 वर्षों में ऐसा पहली बार हुआ है कि राष्ट्रपति का चुनाव कोई वर्तमान राष्ट्रपति अथवा उप-राष्ट्रपति नहीं लड़ रहा है। यह खुली चुनावी दौड़ दोनों यानी डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टियों के लिए वास्तव में असाधारण है।

सामान्यत: चुनाव में एक राष्ट्रपति या उप-राष्ट्रपति होता है जिसका नामांकन पार्टी से आसानी से हो जाता है या फिर केवल दो लोग मैदान में होते हैं और दूसरी ओर प्रत्याशियों की भारी भीड़ होती है। लेकिन, इस बार दोनों ओर दायरा व्यापक है। वास्तव में यह अद्भुत चुनावी चक्र है। हमने ऐसा चुनाव पहले नहीं देखा।

हैगस्ट्रॉम: मेरे विचार से चुनाव की यह दौड़ मजेदार भी है और अन्य देशों के लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण भी। और, इसे शुरू से देखना ज़रूरी है क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि प्रत्याशी कौन होंगे और अंतत: कौन चुनाव जीतेगा।

प्रत्याशियों ने विगत चुनावों की तुलना में काफी पहले से धन एकत्र करना शुरू कर दिया। इसका आंशिक तौर पर कारण यह हो सकता है कि वर्तमान में पद पर आसीन कोई व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ रहा है। क्या कोई अन्य कारण भी है?

कुक: पहले की तुलना में अब मतदाताओं तक पहुंचना कठिन से कठिनतर हो गया है। बीस-तीस वर्ष पहले तीन टेलीविज़न नेटवर्क थे और

वर्ष 2004 के राष्ट्रपति चुनावों में डरहम, न्यू हैम्पशायर में मतदाता पंक्ति में खड़े होकर अपना पंजीकरण करा रहे हैं और मतदान कर रहे हैं। इनमें से ज़्यादातर विश्वविद्यालयी विद्यार्थी थे।

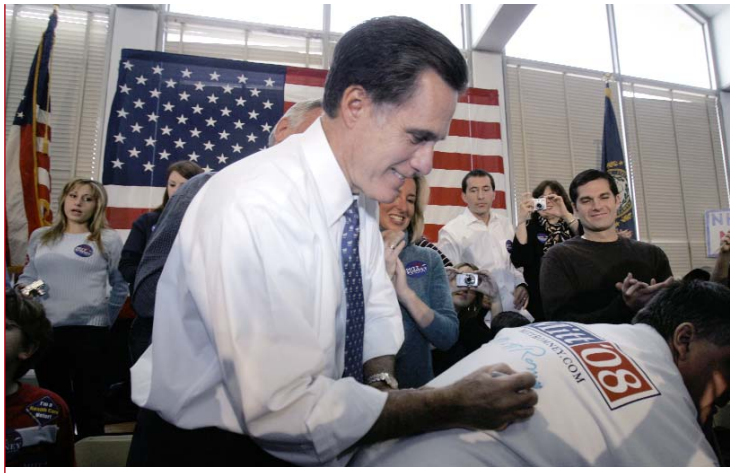

यू. एस. एम्बेसी © ए. पी. फ़ोटो

रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी बनने की उम्मीद रखने वाले मिट्ट रोम्नी जनवरी 2008 में नैशुआ, न्यू हैम्पशायर में प्रचार अभियान के दौरान एक समर्थक की शर्ट पर ऑटोग्राफ दे रहे हैं।

हर व्यक्ति के पास तक पहुंचना काफी आसान था। लेकिन, आज केबल, उपग्रह टेलीविज़न और सैकड़ों चैनलों के अलावा व्यक्ति का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करने वाले अन्य तमाम साधनों के कारण मतदाताओं तक पहुंचना कठिन हो गया है। उनके पास संदेश भेजना मुश्किल काम हो चुका है।

हैगस्ट्रॉम: कई साल पहले तक लोग बड़े अवसरों पर चुनावी अभियान चलाते थे, बड़ी फैक्टरियों में अभियान चलाए जाते थे और इनमें लोग बड़ी तादाद में हिस्सा लेते थे। आज ऐसा नहीं हो सकता। आप जानते हैं अमेरिकी नागरिक कार्यालयों में काम करते हैं। वे इन बड़े आयोजनों में भाग नहीं लेते। इसलिए लोगों तक पहुंचने के लिए आपको टेलीविज़न तथा रेडियो की मदद लेनी पड़ती है और इस प्रकार के विज्ञापन के लिए पैसा चाहिए।

कुक: सच तो यह है कि अमेरिका में लोग उम्मीदवार यानी व्यक्ति को अपना वोट देते हैं, पार्टी को नहीं। संसदीय सरकार वाली व्यवस्था की तुलना में इसमें बहुत पैसा खर्च होता है।

हैगस्ट्रॉम: चूंकि हम अपने उम्मीदवारों को चुनने के लिए प्राइमरी प्रणाली अपनाते हैं जिसका मतलब यह है कि उम्मीदवार न जाने कहां से आ टपके। पार्टी में काफी अरसे से उसका होना नामांकन के लिए ज़रूरी नहीं है। लेकिन, शुरुआती दौर से पहले पार्टी के उन सदस्यों तक पहुंचने के लिए धन चाहिए, लोग चाहिए और समय भी चाहिए।

अमेरिका के इतिहास में इस वर्ष के उम्मीदवारों में ज़्यादा विविधता है। आपके विचार में इस बार ऐसा क्यों हुआ है और क्या भावी चुनावों के लिए यह एक अलग मिसाल बन सकती है?

हैगस्ट्रॉम: देखिए, मैं समझता हूं, एक कारण तो यह है कि हमारा समाज प्रगति कर चुका है, इसमें विविधता बढ़ी है और विविधता को स्वीकारने की क्षमता भी बढ़ी है। बीस-तीस वर्ष पहले इन उम्मीदवारों को कोई भी गंभीरतापूर्वक नहीं लेता।

कुक: इस वर्ष की शुरुआत में किए गए एक जन रुझान मूल्यांकन (गैलप पोल) से पता लगा कि 94 प्रतिशत अमेरिकी नागरिक किसी सुयोग्य अफ्रीकी मूल के अमेरिकी उम्मीदवार को अपना वोट देंगे। अट्ठासी प्रतिशत नागरिकों ने किसी सुयोग्य महिला उम्मीदवार को वोट देने की इच्छा व्यक्त की। आज से 8 या 12, 16 अथवा 20 वर्ष पहले ऐसा कहां हो सकता था। हमारे देश में विविधता पहले की तुलना में काफी बढ़ गई है। यह बात अलग है कि महिला उम्मीदवार पहले भी खड़ी हुई हैं। राष्ट्रपति चुनाव के लिए अफ्रीकी मूल के अमेरिकी भी खड़े हुए लेकिन उन्हें असली मौका कभी नहीं मिला। इस बार वे चुनाव में खड़े हैं और उनके पास असली मौका भी है। इससे पता लगता है कि अमेरिका कितना बदल चुका है।

अमेरिका में काफी लोग सोचते हैं कि चुनाव अभियानों में इराक का मुद्दा छाया रहेगा। इसके अलावा और कौन-से मुद्दे हो सकते हैं?

कुक: इराक एक बड़ा मुद्दा बनेगा, लेकिन शर्तिया कुछ नहीं कहा जा सकता। कौन जाने 2008 के पतझड़ में स्थिति क्या होगी। अर्थव्यवस्था की स्थिति कैसी है, शायद यह भी एक मुद्दा बन जाए। पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग भी सामने है। असल में कुछ लोग 20-30 वर्ष से किसी मुद्दे की तलाश में थे जो अब उन्हें मिल गया है। लेकिन, सच तो यह है कि अधिकांश मतदाता मुद्दों को नहीं व्यक्तियों को तौल रहे हैं।

हैगस्ट्रॉम: अंत में, राष्ट्रपति के चुनाव में जो सबसे महत्वपूर्ण बात है, वह है उसका चरित्र। सवाल यह है कि आप किस पर विश्वास करते हैं।

कई राज्यों ने अपना शुरुआती चुनावी दौर कैलैंडर के हिसाब से पहले ही शुरू कर दिया है। लगता है लोग काफी बड़ी संख्या में 5 फ़रवरी को चुनाव में हिस्सा लेंगे। चुनावी सरगर्मी पर इसका क्या असर पड़ेगा?

कुक: हां, यह विडंबना ही है कि कई राज्यों ने अपने चुनाव का शुरुआती दौर 5 फ़रवरी को ही शुरू करना तय कर लिया है ताकि वे भी अपनी भूमिका निभा सकें। अब चूंकि कई राज्यों ने यह कर लिया है तो अधिकांश राज्यों और उनके नागरिकों का कोई ज़्यादा दखल तो रहेगा नहीं। यों समझ लीजिए कि अगर 50 में से 21, 22 या 23 राज्य जिनमें संघ के कुछ विशालतम राज्य भी शामिल हों, अगर

राष्ट्रपति चुनाव प्राइमरी प्रणाली का इतिहास

राष्ट्रपति चुनाव के लिए प्राइमरीज की शुरुआत 20 वीं सदी में प्रगतिशील आंदोलन से हुई। उन दिनों भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे सुधारवादियों ने राजनीतिक दिग्गजों और बड़े व्यापारिक संस्थानों के आपसी संबंधों का विरोध किया। जनता की सरकार चुनने के लिए प्राइमरी चुनाव उनके सुधारवादी कार्यक्रमों का हिस्सा बन गया।

राष्ट्रपति के प्राइमरी चुनाव का कानून सबसे पहले 1901 में फ़्लोरिडा में लागू हुआ जिसमें पार्टी कार्यकर्त्ताओं को राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए प्रतिनिधि चुनने का विकल्प दिया गया। लेकिन, राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों के नाम मतदान-पत्र देने का कोई प्रावधान नहीं था। राष्ट्रपति पद के लिए सबसे पहले 1910 में अधिमान्य प्राइमरी मतदान ऑरेगन राज्य ने शुरू किया। 1912 तक कम से कम एक दर्जन राज्यों ने राष्ट्रपति पद के लिए प्राइमरी चुनाव का कानून लागू कर दिया। वर्ष दर वर्ष यह संख्या बढ़ती गई। 1968 में 17 और 1976 में 30 राज्यों ने प्राइमरी चुनाव आयोजित किए। 2000 की तरह अब 2008 में भी यह संख्या 41 हो जाएगी। शेष राज्यों में कॉकस बैठकें आयोजित की जाएंगी।

– स्टुअर्ट गोरिन, यूएसइनफ़ो

ज़्यादा जानकारी के लिए:

न्यू हैम्पशायर प्राइमरी की पृष्ठभूमि के बारे में

http://www.politicallibrary.org/Current-Primary/background.aspx

आयोवा के देश में पहले कॉकस के बारे में

http://www.sos.state.ia.us/press/2007/2007_02_20.html

एक ही दिन मतदान करें तो अलग-अलग राज्य के लिए अपनी ओर ध्यान आकर्षित करना कठिन हो जाता है। मेरा अनुमान है कि हमें अगर 5 फ़रवरी के बाद नहीं तो उसके एकाध सप्ताह बाद शुरुआती चुनाव के दौर से पता लग जाएगा कि प्रमुख पार्टियों के उम्मीदवार कौन हैं।

उसके बाद चुनाव अभियान में थोड़े समय के लिए मंदी आएगी। लोग दो-तीन महीने दूसरी बातों के बारे में सोचेंगे। इसके बाद एक बार फिर अभियान तेज़ी पकड़ेगा और नवंबर में चुनाव संपन्न होने तक ऐसा रहेगा।

हैगस्ट्रॉम: फिलहाल यह आयोवा की राजनीतिक बैठकों और न्यू हैम्पशायर प्राइमरी की सरगर्मी के रूप में दिखाई दे रहा है जो 5 फ़रवरी के दौर के पूर्व की हलचल है और इससे यह संकेत मिल जाएगा कि अमेरिकी नागरिक किसे पसंद करते हैं।

अनिश्चित निर्णय वाले मतदाता क्या देखते हैं और क्या हमें यह आभास है कि इस बार के चुनाव में वे क्या चाहेंगे?

कुक: वे चरित्र देख रहे हैं या आराम। इसे यों समझ लीजिए कि आप अपने ड्राइंग रूम में किसे बुलाना चाहते हैं जो अगले चार वर्ष तक आपके टेलीविज़न सेट पर दिखाई देगा। मतदाता इस बात को समझते हैं कि उन्हें उन तमाम मुद्दों के बारे में कुछ पता नहीं है जिनका सामना राष्ट्रपति को करना पड़ता है। वे तो बस यह जानते हैं कि उन्हें कौन पसंद है, जो ऐसी-ऐसी चीज़ों पर निर्णय लेगा जिनके बारे में उन्हें लेशमात्र भी पता नहीं है।

हैगस्ट्रॉम: मैं समझता हूं, ऐसे मतदाताओं के लिए यह मुद्दा महत्वपूर्ण होगा कि जब हमारा चुनाव अभियान जोर पकड़े तो उस समय इराक युद्ध की स्थिति क्या है। यह उनके लिए अहम मुद्दा हो सकता है या हो सकता है कोई और मुद्दा सामने आ जाए।

वर्ष 2008 की चुनावी दौड़ का अमेरिका की विदेश नीति पर क्या असर पड़ेगा?

हैगस्ट्रॉम: डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कह चुके हैं कि वे इराक नीति में परिवर्तन करेंगे लेकिन रिपब्लिकन उम्मीदवारों में इस बारे में अभी मतभेद है कि वे राष्ट्रपति बुश की राह पर चलते रहेंगे या कोई परिवर्तन करेंगे।

कुक: मेरे विचार से अमेरिका का राष्ट्रपति दुनिया के अन्य देशों के लिए अमेरिका का चेहरा है। यह एक नई शुरुआत का सुअवसर है।

क्या आप दोनों में से कोई बता सकता है कि इस चुनाव में मतदान करने वाले लोगों की संख्या बढ़ेगी या नहीं?

कुक: हमने पिछले छह या आठ वर्षों में मतदाताओं की संख्या को बढ़ते हुए देखा है जिसके कई कारण हैं। हम लोगों को यह कहते हुए सुनते थे कि ''कौन जीतता है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता।'' लेकिन, अब यह नहीं सुनाई देता क्योंकि लोग समझ गए हैं कि आतंकवाद हो या युद्ध, गरीबी हो या कैटरीना समुद्री तूफान, इस बात से फर्क पड़ता है कि अमेरिका का राष्ट्रपति कौन है। मत डालने वाले अमेरिकी मतदाताओं की कुछ तुलनाएं तर्कसंगत नहीं लगतीं। अमेरिका पर ध्यान दीजिए और आप म्युनिसिपल, काउंटी, राज्य, संघ, प्राथमिक चुनाव, आम चुनाव, कुछ मामलों में विशेष चुनाव आदि के बारे में सोचने लगते हैं। अन्य देशों की अपेक्षा अमेरिकी लोगों से मतदान करने को अधिक कहा जाता है। मैं समझता हूं, अमेरिका में 6,00,000 से ज़्यादा निर्वाचित पद हैं। इसलिए तुलना करना बेकार है क्योंकि दुनिया में अमेरिका के लोग सबसे अधिक मतदान करते हैं। ये बात अलग है कि वे कई तरह के चुनावों में हिस्सा लेते हैं।

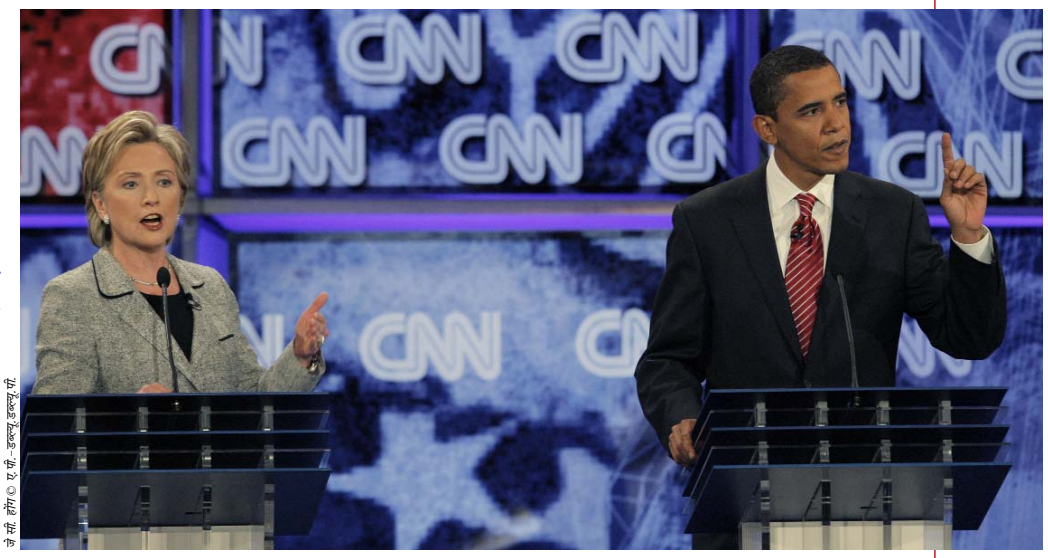

राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से प्रत्याशी बनने की उम्मीद रखने वालीं सेनेटर हिलैरी रोडहैम क्लिंटन (बाएं), और सेनेटर बराक ओबामा लास वेगस की यूनिवर्सिटी ऑफ़ नेवादा में उम्मीदवारों से सवाल-जवाब के लिए आयोजित कार्यक्रम में एक सवाल का जवाब देते हुए।

ए. पी. वर्ल्डवाइड फ़ोटोज़ © एपी

हैगस्ट्रॉम: लोग इस बात को समझते हैं कि कौन जीतता है इससे फर्क पड़ता है। और, मैं मानता हूं कि मतदाता मतदान के लिए अत्यधिक प्रेरित भी होंगे, लेकिन यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि उम्मीदवार कौन है, और जिस व्यक्ति का नामांकन किया गया है उसे जिताने के लिए क्या पार्टी का पूरा समर्थन मिलता है।

हमें लगता है, उम्मीदवारों पर चर्चा में प्रौद्योगिकी, अनौपचारिक स्तर पर 'वेब' बड़ी भूमिका निभाता है। क्या आप समझते हैं, उम्मीदवार के चुनाव

बाएं: रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति प्रत्याशी बनने की उम्मीद रखने वाले आर्कान्सास के पूर्व गवर्नर माइक हकाबी नवंबर 2007 में ओहायो स्कूल में एक रैली के दौरान बेस गिटार बजाते हुए।

डेविड कोपेनहेवर © पी. ए. पी.-ब्लूम्बर्ग

अभियान पर इसका असर पड़ता है?

कुक: अगर आप चुनाव अभियान के संपूर्ण बजट पर ध्यान दें तो आप देखेंगे कि एक अहम हिस्सा लेकिन उम्मीदवारों के प्रचार अभियान बजट का एक छोटा हिस्सा ही नई प्रौद्योगिकी में खर्च किया जाता है।

अमेरिका में निर्वाचित पद

अमेरिका में हालांकि एकल संघीय सरकार है, लेकिन देश में:

- 50 राज्य सरकारें हैं,
- 3,00,000 से अधिक निर्वाचित पद तथा स्थानीय सरकारें (काउंटी, शहर तथा नगर) हैं,
- और लगभग 2,00,000 विशेष उद्देश्यीय जिले यथा स्कूल जिले व जल जिले हैं।

इसके परिणामस्वरूप अमेरिका के मतदाताओं से केवल राष्ट्रपति तथा कांग्रेस के लिए ही नहीं बल्कि हज़ारों राज्यस्तरीय तथा स्थानीय सरकारों के पदों के लिए भी मतदान करने को कहा जाता है जैसे: राज्य विधायक, गवर्नर तथा लेफ्टिनेंट गवर्नर, राज्य के लेखाधिकारी, काउंटी कमिश्नर, नगरों व शहरों के मेयर, महापौर, जज, कांस्टेबल, मजिस्ट्रेट, शेरिफ़, जस्टिस ऑफ़ द पीस तथा स्कूल व कॉलेज बोर्डों, यूटिलिटी बोर्डों आदि के सदस्य, और पब्लिक ट्रस्ट के अन्य पद।

''रोजगार के अवसर पैदा करना इतना मुश्किल नहीं है... मुझे चुनिए और और आप एक व्यक्ति को रोजगार दिला देंगे।''

कुछ असाधारण निर्वाचित पद इस प्रकार हैं: काउंटी कोरोनर, सिंचाई जिलों तथा नगरीय कब्रिस्तान कमीशनों के सदस्य और ट्री वार्डन जो नगरीय संपत्ति के दायरे में आने वाले खतरनाक वृक्षों को हटाते हैं।

हैगस्ट्रॉम: अपने समर्थकों को संगठित करने का यह (इंटरनेट) एक अच्छा साधन है, इससे पैसा भी जमा किया जा सकता है, लेकिन मतदाता को आकर्षित करने के लिए यह ठीक नहीं है। हां, इंटरनेट पर ही दृश्य माध्यम 'यूट्यूब' इसका अपवाद है।

हर चुनावी अभियान में अब कोई युवा व्यक्ति कैमरा लेकर विपक्ष के उम्मीदवार का पीछा करता है। यहां चरित्र का सवाल है। अमेरिका के लोग जानना चाहते हैं कि इस मौके पर यह असावधान (अनगार्डेड) व्यक्ति कौन है। और, ऐसे असावधानी के कुछ क्षण तब आते हैं जब उम्मीदवार अपनी चाहने वाली भीड़ को संबोधित कर रहा हो। इसलिए सभी उम्मीदवारों का हर समय पीछा करके फ़िल्म बनाना और उनकी गलती को यूट्यूब में दिखाने से बात खुल जाती है। मेरे विचार से मतदाताओं को यह नहीं सोचना चाहिए कि उम्मीदवार का वही एक पहलू है। लेकिन, यह चुनावी अभियानों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

अमेरिकी चुनावों में राष्ट्रपति चुनाव की दौड़ का नतीजा अंतिम रूप से चंद राज्यों पर निर्भर रहता है। हम देखते हैं कि समय-समय पर बस उन्हीं राज्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है क्योंकि वहां के लोग या तो वे डेमोक्रेटिक या फिर रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करते हैं। क्या हम इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि इस बार भी वे खास राज्य निर्णायक भूमिका निभाएंगे या फिर नए राज्य सामने आएंगे?

कुक: मौटे तौर पर देखें तो वही राज्य होंगे। अगर आप वर्ष 2000 की जॉर्ज डब्ल्यू. बुश तथा अल गोर की या फिर 2004 की जॉर्ज डब्ल्यू. बुश तथा जॉन कैरी की चुनावी दौड़ पर ध्यान दें तो पूरे अमेरिका में कमोबेश तीन ही राज्य अलग प्रकार के हैं। गोर न्यू मैक्सिको और आयोवा दोनों राज्यों से जीत गए लेकिन न्यू हैम्पशायर में उनकी हार हुई, जबकि कैरी न्यू हैम्पशायर में जीते मगर न्यू मैक्सिको और आयोवा में हार गए। मुझे लगता है, इस बार भी वही राज्य मुख्य होंगे लेकिन हां, कुछ दक्षिण-पश्चिमी राज्यों में डेमोक्रेटिक उम्मीदवारों को थोड़ी बढ़त मिल रही है। अब देखिए, न्यू हैम्पशायर बहुत ही रूढ़िवादी राज्य था जहां रिपब्लिकनों को वोट मिलते थे, लेकिन अब वह बहुत कम रूढ़िवादी रह गया है और डेमोक्रेटिक हो गया है। इसके साथ ही आप देख सकते हैं, कुछ

बीना एस्पेरेत © ए.पी. - इमेज़ इमेज़ पी.

बाएं: डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बनने की उम्मीद रखने वाले पूर्व सेनेटर जॉन एडवर्ड्स जुलाई 2007 में नैशुआ, न्यू हैम्पशायर में मतदाताओं से बातचीत करते हुए।

नीचे: रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी बनने के दावेदारों में शामिल सेनेटर जॉन मैक्केन मिशिगन के प्राइमरी चुनावों के मौके पर इप्सियालैंटी में एक प्रचार रैली के दौरान अपने समर्थकों से मिलते हुए।

अन्य राज्य डेमोक्रेटिक कम और रिपब्लिकन अधिक होते जा रहे हैं। लुइज़ियाना का उदाहरण सामने है। वेस्ट वर्जीनिया में भी चुनावी समीकरण बदल रहे हैं और डेमोक्रेटों के सामने कठिनाइयां आ रही हैं जबकि यह सुरक्षित डेमोक्रेटिक राज्य माना जाता था।

हैगस्ट्रॉम: मैं इस चुनाव में ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं को लुभाने के लिए कड़े संघर्ष की आशा कर रहा हूं। ग्रामीण अमेरिका को साधारणत: यों रिपब्लिकनों का क्षेत्र माना जाता है, लेकिन वहां हर बार रिपब्लिकनों की ही जीत नहीं होती। वर्ष 2006 की संसदीय चुनावी दौड़ में वहां डेमोक्रेटों की स्थिति काफी अच्छी रही।

वर्ष 2000 से राज्य इस बात पर भी काफी समय और धन खर्च कर रहे हैं कि चुनाव कैसे लड़ा जाए। क्या आपको लगता है कि वोट डालने वाले मतदाताओं की संख्या पर इसका कोई असर पड़ेगा?

कुक: वर्ष 2000 की तुलना में 2004 में मत डालने वाले मतदाताओं की संख्या अधिक थी। पिछले दो मध्यावधि चुनावों में मतदान करने वालों की संख्या बढ़ी है। एक देश के रूप में हम मतदाता-चुनाव प्रशासन प्रक्रिया पर बहुत धन खर्च नहीं करते, इस कारण हमारी इस प्रणाली में कई कमियां हैं। यह धोखाधड़ी नहीं है, भले ही काफी लोग ऐसा समझते हैं।

अगर अमेरिका में मतगणना और चुनाव प्रशासन पर अधिक धन व्यय किया जाता तो हमारी चुनाव प्रणाली बहुत अच्छी होती। लेकिन, आप यह सब किस कीमत पर करना चाहेंगे? शिक्षा की या स्वास्थ्य रक्षा की कीमत पर? या विश्व भर में विदेशी मदद के रूप में हमारी ज़िम्मेदारियों की कीमत पर? बड़े कामों की पृष्ठभूमि में यह कभी असली उच्च प्राथमिकता नहीं रही।

बीना सीगमैन © ए.पी. - इमेज़ इमेज़ पी.

हैगस्ट्रॉम: हमारे चुनावों में भिन्नताओं की जो कई कहानियां सुनी जाती हैं, उनका एक कारण तो यह है कि हमारे चुनाव राज्य सरकारों द्वारा किए जाते हैं। संघीय सरकार केवल तब दखल देती है जब कोई बड़ी समस्या आ खड़ी होती है। इसलिए एक राज्य से दूसरे राज्य और एक काउंटी से दूसरी काउंटी तक कई अंतर दिखाई देते हैं।

एक अन्य कारण यह भी है कि दक्षिणी राज्यों में अफ्रीकी मूल के अमेरिकी लोगों को मत का प्रयोग न करने देने का हमारा पुराना इतिहास रहा था। और, कोई भी ऐसी प्रणाली नहीं अपनाना चाहता जिसमें लोगों के मताधिकार पर रोक लगाई जा रही हो। इस बात का विरोध किया जाता है कि इतनी कड़ाई न बरती जाए जिसके कारण कोई मतदान ही न कर सके। और अमेरिका जैसे विविधता पूर्ण आबादी वाले देश में यह एक बड़ा मुद्दा है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

कुक राजनीतिक रिपोर्ट
http://cookpolitical.com/

नेशनल जर्नल
http://nationaljournal.com/

अमेरिका में लोगों का रुझान
http://www.pollingreport.com/

यूट्यूब पर अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव
http://www.youtube.com/results?search_query=u.s.+presidential+election+&search=Search

***मिशेल ऑस्टीन** ब्यूरो ऑफ इंटरनेशनल इनफ़ॉर्मेशन प्रोग्राम्स में लेखिका हैं।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।